IJAER/March-April 2021 /Volume-10/Issue 5 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

हिन्दी बालसाहित्य में बाल मनोविज्ञान के सिद्धान्त एवं महत्व पर अध्ययन

जमना देवी
Research Scholar
Malvanchal University
Indore (M.P.)

डॉ0 शोभा रतूड़ी
Research Supervisor
Malvanchal University
Indore (M.P.)

सार

मनोविज्ञान मानव मन का विश्लेषणात्मक रूप है। मन के भावों या मनोवेगों का आलय, मनोविकारों या अनुभूतियों का कोष है और मनोविज्ञान में इन्हीं भावों, अनुभूतियों, उद्वेगों की व्याख्या प्रस्तुत की जाती है। मनोविज्ञान के विषय की ओर मानव मन सदा आकर्षित रहा है। उसे अपने और दूसरों के स्वभावों, गुणों, व्यवहारों, संबंधों, प्रयासों, सुख–दुःख तथा अन्य अनुभवों में रुचि रही है। मनुष्य की इन सब उधेड़बुन में सदियों तक प्रेक्षणों, अनुमानों, वाद–विवाद एवं खोज की अनेक धाराएँ चलती रही है। उन्हीं में मनोविज्ञान का जन्म एवं विकास हुआ है।

बाल मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक शाखा है। जिसके अंतर्गत बालकों के व्यवहार एवं उनके अंतरमन का अध्ययन किया जाता हैं। यह अधुनिकता के कार्यो का ही परिणाम हैं। शिक्षा में इसके प्रयोग के आधार पर ही वर्तमान शिक्षा को बाल–केंद्रित शिक्षा का रूप दिया गया हैं। यह शिक्षा के क्षेत्र में नई खोज हैं, जो छात्रों की वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति करने का निरंतर प्रयास करती हैं। इसको मनोविज्ञान की शाखा इसीलिए कहा जाता हैं क्योंकि इसके अंतर्गत मनोवैज्ञानिक सिद्धांतो, मानकों एवं विचारों को सम्मिलित किया जाता है। तो आइए जानते हैं कि बाल मनोविज्ञान क्या हैं। यह वह धारणा है, जिसका उद्देश्य बालकों के सर्वांगीण विकास करना है। इसका निर्माण का उद्देश्य बालकों के मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक का विकास करना हैं। यह छात्रों के मानसिक विकास को केंद्र बिंदु मानकर कार्य करती हैं। इसका केंद्र बिंदु बालक होता हैं एवं इसके अंतर्गत बालकों के व्यवहार व उनके व्यक्तित्व से संबंधित समस्त पहलुओं का अध्ययन किया जाता हैं। यह बालकों के लाभ से जुड़े समस्त मनोवैज्ञानिक तथ्यों को उजागर करने का कार्य करता हैं।

मुख्य शब्दः– मनोवैज्ञानिक, बालसाहित्य और सम्मिलित।

प्रस्तावना

आधुनिक शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों की प्राप्ति करने एवं शिक्षा को प्रभावशाली बनाने हेतु बाल मनोविज्ञान को शिक्षा में सम्मिलित किया जाना अति आवश्यक हो गया है। यह पाठ्यक्रम,समय–सारणी, विद्यालयी कार्यक्रम, सह–पाठ्यक्रम सामग्री के चयन आदि में अपनी सक्रिय भूमिका निभाती हैं। आधुनिक शिक्षा में हो रहे बदलावों का कारण भी यही हैं।

शिक्षा को बाल केंद्रित बनाने का कारण छात्रों को उनकी रुचि के अनुसार शिक्षा प्रदान करवाना हैं। जिससे वह अपनी–अपनी क्षमता के अनुसार अपना बौद्धिक विकास कर सकें। यह सभी बाल मनोवैज्ञानिक पद्यति के बलबूते ही संभव हो पाया हैं।

यह छात्रों के व्यवहार में हो रहें अवांछनीय बदलावों को उचित दिशा प्रदान करने का कार्य करती हैं। जिससे उनमें हो रहे विकास की प्रक्रिया को तीव्र किया जा सकें। यह राष्ट्र के विकास एवं उसके चरित्र निर्माण में अपनी अहम भूमिका निभाती हैं।

सामाजिक आवश्यकताओं और शिक्षा के वास्तविक लक्ष्यों के निर्माण करने एवं छात्रों के मानसिक, बौद्धिक विकास को उचित दिशा एवं गति प्रदान करने का कार्य इसके अंतर्गत ही किया जाता हैं।

आधुनिक बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य के अनुरूप छात्रों के व्यवहार एवं उनकी मनोस्थिति में निरंतर बदलाव आ रहा हैं। अपितु उनको उचित दिशा दिखाने एवं उनकी विकास की गति को तीव्र करने हेतु बाल मनोविज्ञान को अपनाना एवं शिक्षा में इसे लागू करना आवश्यक हो गया हैं। जिससे उनके व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाया जा सकें। बाल मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की शाखा के रूप में व्यावहारिक तथा विधायक विज्ञान के रूप में विकसित हुआ है। डम्बिल ने मनोविज्ञान को प्राणियों के व्यवहार का विधायक विज्ञान कहा है। ड्रेवर ने मनोविज्ञान की परिभाषा प्राणियों के मानसिक एवं शारीरिक व्यवहार की व्याख्या करने वाले विज्ञान के रूप में की है।

साहित्य की समीक्षा

राजेन्द्र कुमार शर्मा ने लिखा है बाल साहित्य की भाषा के विषय में ''भाषा, भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। काव्य सृजन की प्रभावात्मकता पर भाषा का सीधा प्रभाव पड़ता है।

शिशुगीतों और बाल कविताओं में तो भाषा का विशेष महत्व होता है। बाल कवियों के लिए बाल मनोविज्ञान के अनुरूप काव्य भाषा में सृजन करना, वास्तव में एक गम्भीर चुनौती है। सामान्य साहित्य की रचना तो कोई भी व्यक्ति कर सकता है, किन्तु बाल साहित्य सृजन सभी के बस की बात नहीं होती है।'' बाल साहित्य की भाषा सरल और कोमल होनी चाहिए तभी बालक उसे समझ सकेंगे तथा बाल साहित्य के माध्यम से ही बालकों का भाषा ज्ञान भी विकसित होता है तो बाल साहित्य के लेखक को इसका भी ध्यान रखना होता है। शब्द संयोजन, शब्दों की आवृत्ति, लय एवं कोमल ध्वनि बालकों को प्रभावित करती हैं।

डॉ. शिरोमणि सिंह 'पथ' ने लिखा है– ''बाल कविता की रचना ठीक उसी तरह होनी चाहिए जिस प्रकार माँ बच्चे का पालन पोषण करती है। उसी प्रकार बाल कविता की प्रकृति होनी चाहिए जो बाल मन में एक खिलखिलाहट और स्वतंत्र भावों का संचार करे जो न तो किन्हीं उपदेशात्मक या नैतिक बंधनों में बांधती हो, और न ही उबाऊ हो, जो बाल कविता केवल बाल मन को रिझाने और लुभाने वाली और बिना किसी बोझ वजन के होनी चाहिए।''

प्लेटो के अनुसार, ''बच्चों का शिक्षण बच्चों की पौराणिक, धार्मिक, नीतिकथाओं, पवित्र गाथाओं से प्रारंभ होना चाहिए। ये कहानियाँ सरल, सुबोध कविताएँ भी हो सकती हैं।'' प्लेटो शिक्षा को मानव के क्रमिक विकास का साधन मानते हैं। शरीर के पूर्ण विकास के लिए जिस प्रकार भाँति–भाँति के व्यायाम, खेलकूद, विद्यार्थियों के शरीर की देख–रेख को महत्व दिया जाता है, वहीं आत्मिक विकास के लिए सर्वगुणों के विकास को प्लेटो ने आवश्यक माना।

डॉ शकुंतला कालरा कहती हैं :– "साहित्य जीवन का परिष्कार और पकड़ है इस विचार चिंतन में बच्चों के विकास में बाल साहित्य और उसे रचने वाले साहित्यकारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है और रहेगी।''

वर्तमान में बाल साहित्य के स्वरूप में परिवर्तन आया है। वैज्ञानिक तरक्की के साधनों ने पश्चिमी सभ्यता और भोगवाद का आधिपत्य बढ़ा दिया है। लोक कथाओं, लोकगीतों का स्थान धीरे–धीरे समाप्त होता जा रहा है।'' आज विश्व भर में बच्चों पर मीडिया के प्रभावों को लेकर सबसे अधिक चिंता उसके

हिंसात्मक प्रभावों की है। मनोवैज्ञानिक सर्वेक्षण के अनुसार बचपन में पड़ने वाले हिंसा के प्रभाव बड़े दूरगामी होते हैं।

लेमान हाप्ट ने बाल साहित्य की उपयोगिता पर महत्त्वपूर्ण बात कही है – ''पुस्तक पठन की महान उपयोगिता ज्ञान हमें कभी–कभी कटु अनुभव से प्राप्त होता है। मुझे हमेशा ऐसा लगा है कि मनुष्य के लिए सबसे दुखद चीज यह भावना है कि किसी अचूक और शत्रुतापूर्ण रीति से दुर्भाग्य ने अपने शिकार के लिए मुझे ही चुना है। यह विचार अत्यंत कष्टदायक सिद्ध हो सकता है कि संसार में अकेला मैं ही एक विशेष प्रकार के दुःख भार से दबा हुआ हूँ। ऐसी स्थिति में संभव है तुम्हारे हाथ अचानक ऐसी पुस्तक पर पड़ जाए जो तुम्हें यह बताए कि ठीक इसी तरह का दुःख किसी और के जीवन में भी आया था और उसने कैसे उस पर काबू पाया था।

द इंटरनेशनल कम्पेनियन इनसाइक्लोपीडिया ऑफ चिल्ड्रन लिटरेचर नोट करता है कि '' शैली की सीमाएँ ... निश्चित नहीं हैं बल्कि धुंधली हैं''। कभी–कभी, इस बारे में कोई समझौता नहीं किया जा सकता है कि क्या किसी दिए गए कार्य को वयस्कों या बच्चों के लिए साहित्य के रूप में सबसे अच्छा वर्गीकृत किया जाता है। कुछ काम आसान वर्गीकरण को धता बताते हैं। जेके राउलिंग की हैरी पॉटर श्रृंखला युवा वयस्कों के लिए लिखी और विपणन की गई थी, लेकिन यह वयस्कों के बीच भी लोकप्रिय है।

बाल मनोविज्ञान का महत्व

बाल मनोविज्ञान सामान्य मनोविज्ञान की एक विशेष शाखा है जो बच्चों के विकास और व्यवहार पर केंद्रित है। बाल मनोविज्ञान में जन्म से किशोरावस्था तक के बच्चों का अध्ययन होता है। बाल मनोविज्ञान में शिक्षा मनोविज्ञान का भी अध्ययन होता है जो स्कूल जाने वाले बच्चों के शारीरिक, संवेगात्मक, संज्ञानात्मक और सामाजिक विकास का अध्ययन करता है। इसके साथ ही इस बात ध्यान केंद्रित करता है कि परिवेश और बाहरी प्रेरणा का सीखने के ऊपर क्या असर पड़ता है।

मस्तिष्क के क्षेत्र में होने वाले शोध (जैसे ब्रेन बेस्ड लर्निंग इत्यादि) का भी इस्तेमाल बाल मनोविज्ञान व शिक्षा के क्षेत्र में किया जा रहा है ताकि 21वीं सदी के ज्ञान और समझ का इस्तेमाल जमीनी स्तर पर बच्चों के बारे में समझ को वैज्ञानिक सोच के ज्यादा करीब लेकर आ सके।

इसका उद्देश्य बच्चों के बारे नें पहले से बनी परंपरागत अवधारणाओं को चुनौती देना भी है ताकि लोग बच्चों को कच्ची मिट्टी का घड़ा या खिलौना न समझे, बल्कि उनके व्यक्तित्व को समझने की कोशिश करें और उसके व्यवहार को व्यक्तित्व के साथ जोड़कर देख सकें। बाल मनोविज्ञान बच्चों के व्यवहार से जुड़ी विभिन्न समस्याओं का विश्वसनीय समाधान देता है। उदाहरण के तौर पर अगर कोई बच्चा पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा है, या फिर कोई बच्चा बहुत ज्यादा सक्रिय है, अवसाद, झिझक और विस्तर गीला करने जैसी समस्याओं का भी अध्ययन बाल मनोविज्ञान में किया जाता है।

बाल मनोविज्ञान में आयु के अनुरूप शारीरिक व मानसिक विकास हो रहा है या नहीं इस बात का भी अध्ययन किया जाता है। इसके साथ ही बाल्यावस्था में संवेगात्मक व संज्ञानात्मक विकास से जुड़ी अवस्थाओं का भी अध्ययन किया जाता है।

बाल मनोविज्ञान बतौर माता–पिता आपको अपने बच्चे को समझने में मदद करती है। अपने स्कूल या क्लास में पढ़ने वाले बच्चे को समझना एक शिक्षक के लिए भी पढ़ाने की रणनीति बनाने में काफी उपयोगी साबित होता है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि अपने बच्चे को समझने का सबसे आसान तरीका उनके सोने, खाने और खेलने की आदतों को गौर से देखना है।

ऐसी खूबियों को पहचानने की कोशिश करें जिसमें निरंतरता दिखाई देता है। जैसे कुछ बच्चे खेल में सदैव आगे रहते हैं। बाकी बच्चों की भागीदारी थोड़ी कम होती है। या फिर उनमें भागीदारी को लेकर शुरुआती स्तर पर झिझक होती है जो बाद में थोड़े से सहयोग के बाद दूर हो जाती है।

बच्चों को समझने के लिए सबसे आसान तरीका है कि उनसे रोजमर्रा के अनुभवों के बारे में बात की जाए। बच्चों से बात करें कि स्कूल में उनका दिन कैसा रहा? कौन सी बात उनको सबसे ज्यादा अच्छी लगी। खेल इवेंट में उनको कौन सी बात अच्छी लगी। उनको कौन सी शिक्षक सबसे ज्यादा

पसंद हैं? उनको कौन सी चीजें पसंद है इत्यादि। जो माता–पिता अपने बच्चों के साथ ज्यादा समय बितातें हैं उनके लिए बच्चों को समझना काफी आसान होता है।

आत्म–सम्मान जीवन में सफल होने की कुंजी है। ऐसे में जरूरी है कि बच्चों में सकारात्मक स्व–प्रत्यय (सेल्फ कांसेप्ट) का विकास हो, ताकि बच्चों का बचपन और किशोरावस्था खुशियों से भरपूर हो। बच्चे और माता–पिता का अच्छा रिश्ता बच्चे के खुद के बारे में एक सकारात्मक आत्म–छवि का निर्माण करता है और बच्चा दूसरे लोगों को भी सकारात्मक नजरिये से समझने की कोशिश करता है। आमतौर पर बच्चे माता–पिता का समय चाहते हैं, यह बड़ी स्वाभाविक सी बात है। इससे बच्चे खुद को विशिष्ट महसूस कराते हैं। इससे बच्चों को लगता है कि लोग उनकी परवाह करते हैं। उनके ऊपर ध्यान देते हैं। उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए तत्पर हैं।

माता–पिता को अपने बच्चों के साथ नियमित रूप से खेलने का समय निकालना चाहिए। यह बच्चों के संवेगात्मक विकास के लिए काफी अच्छा माना जाता है। अगर आप सिंगल पैरेंटस हैं तो अपने दोस्तों को घर पर इनवाइट करें या फिर बच्चे को अपने साथ लेकर दोस्तों के घर जाएं ताकि बच्चों को अन्य बच्चों व लोगों का साथ मिल सके।

बच्चों के स्वाभाविक विकास के क्रम में सामाजिक कौशलों की विकास भी होता है। मगर कुछ बच्चों में सामाजिक कौशलों का विकास अन्य बच्चों की भांति सहजता के साथ नहीं हो पाता। ऐसे में जरूरी होता है कि हम ऐसे बच्चों को सामाजिक कौशलों के विकास में सपोर्ट करें उदाहरण के तौर पर एक बच्चा घर पर तो काफी शोर मचाता है। अगर कोई चीज उसके मन की नहीं होती तो रोकर अपनी बात मनवाने की कोशिश करता है।

पांचवीं कक्षा में पढ़ने वाला यह बच्चा स्कूल में बिल्कुल खामोश रहता है। वह अपनी बात किसी के साथ शेयर करना चाहता है। कभी–कभी वह अपनी छोटी बहन के साथ अपनी बात सांझा करता है जो उससे क्लास में एक साल पीछे हैं। उसका एक बड़ा भाई है, जो दसवीं कक्षा में है। वह चाहता है कि उसकी बराबरी करे। इसलिए वह हर बात में अपनी तुलना उससे करता है जबकि अपनी कक्षा के अन्य बच्चों के बारे में वह ज्यादा नहीं सोचता कि उसे उनके साथ घुलना–मिलना चाहिए ताकि वह सहजता के साथ स्कूल में समायोजन स्थापित करके आगे बढ़ सके।

सामाजिक कौशलों का विकास

माता–पिता हमें बच्चों बच्चे के दीर्घकालीन भविष्य को ध्यान में रखकर फैसला लेना चाहिए। इससे हम बच्चों को सामाजिक कौशलों के विकास और समायोजन में ज्यादा व्यवस्थित ढंग से मदद कर पाएं। बच्चे के नए प्रयासों के लिए उसे प्रोत्साहित करना चाहिए। जबकि किसी प्रतिस्पर्धा में पीछे रहने पर भी बच्चों का हौसला बढ़ाना चाहिए कि में हर बार जीत नहीं मिलती। हमें कोशिश करनी पड़ती है खुद को प्रतिस्पर्धा में बनाए रखने के लिए और उसमें कामयाबी हासिल करने के लिए।

बाल्यावस्था से किशोरावस्था में संक्रमण काल के दौरान माता–पिता को अपने बच्चों को समझने और समझाने में परेशानी होती है। बच्चों से लगातार होने वाला संवाद और शिक्षकों से उनके प्रगति के बारे में लगातार पूछते रहना इस दिशा में काफी मददगार साबित हो सकता है।

बाल मनोविज्ञान के सिद्धान्त

1) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत – इस सिद्धांत का प्रतिपादन मनोवैज्ञानिक सिगमंड फ्रायड द्वारा किया गया हैं। इनके अनुसार व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं के अनुसार अपनी क्षमताओं में वृद्धि करने का कार्य करता हैं। यह सिद्धांत आधुनिक समय का प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक सिद्धांत हैं।

2) व्यवहारवादी सिद्धांत – इस सिद्धांत का प्रतिपादन मनोवैज्ञानिक जॉन डॉलर एवं पी.जे नीर द्वारा किया गया था। इस सिद्धांत के अनुसार बालकों के व्यवहार के आधार पर बालकों की मनोदशा को आसानी से समझा जा सकता हैं। अर्थात उनकी आवश्यकता एवं उनके मन–मस्तिष्क में चल रहे द्वंद को आसानी से पहचाना जा सकता हैं।

3) संज्ञानात्मक सिद्धांत – इस सिद्धांत का प्रतिपादन मनोवैज्ञानिक गेस्टाल्ट द्वारा किया गया था। इस सिद्धांत के अनुसार बालकों की बुद्धि एवं ज्ञान में हो रहे परिवर्तनों के आधार पर उनके व्यवहार में भी परिवर्तन आते रहता हैं।

उपसंहार

बाल–मनोविज्ञान का विकास, विकासात्मक मनोविज्ञान से हुआ। हरलॉक के अनुसार– "विकासात्मक मनोविज्ञान की वह शाखा है, जो गर्भाधान से लेकर मृत्युपर्यन्त तक होने वाले मनुष्य के विकास के विभिन्न कालों में होने वाले परिवर्तनों पर विशेष ध्यान देते हुए अध्ययन करती है। प्रारम्भ में केवल स्कूल जाने से पहले की आयु के बच्चों के विकास में रुचि ली जाने लगी, इसके बाद नवजात शिशु तथा जन्म से पहले की उसकी अवस्था पर भी ध्यान दिया जाने लगा। प्रथम महायुद्ध के कुछ बाद किशोरावस्था के विषय में किये गये खोजपूर्ण अध्ययन उत्तरोत्तर अधिक संख्या में प्रकाशित होने लगे और दूसरे महायुद्ध के बाद प्रौढ़ावस्था तथा जीवन के उत्तरकालीन वर्षों पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा।"

विकास की प्रक्रिया में बालक का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। अभिभावक, शिक्षक, समाज–सुधारक, राजनेता सभी की आवश्यकताओं का केन्द्र बालक होता है। माता–पिता बालक को ईश्वर की देन मानते हैं तथा आशा करते हैं कि वह पूर्वजों की भाँति शौर्य तथा कीर्ति का प्रदर्शन करे एवं मोक्ष प्राप्ति में सहायक बने शिक्षक चाहता है चालक समाज का उपयोगी अंग बने, समाज सुधारक उसमें ऐसे गुणों तथा कौशलों के दर्शन करना चाहता है, जिनसे समाज में सामाजिक कुशलता का निर्माण हो सके। इसी प्रकार राजनेता, राष्ट्र के कुशल नेतृत्व के दर्शन बालक में करता है।

अब यह समझा जाने लगा है कि बाल–मनोविज्ञान के स्थान पर बाल–विकास नाम को प्रचलित किया जाय। बाल मनोविज्ञान में बालक के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है, लेकिन विकास के अन्तर्गत उन सभी तथ्यों तथा घटकों का अध्ययन किया जाता है, जो बालक के व्यवहार को निश्चित स्वरूप प्रदान करते हैं। प्रारम्भ में बाल मनोविज्ञान के अन्तर्गत शिशुओं तथा बालकों की समस्याओं के अलग–अलग अध्ययन किये गये। इसमें अध्ययन को पूर्णता नहीं मिली।

संदर्भ

- जिप्स, जैक, एड. (२००६)। बाल साहित्य का ऑक्सफोर्ड विश्वकोश । ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। आईएसबीएन 978–0–19–514656–1.
- युवा लोगों के लिए पुस्तकों पर अंतर्राष्ट्रीय बोर्ड।

- राष्ट्रीय बाल साक्षरता वेबसाइट, अमेरिका स्थित साक्षरता संसाधन साइट।
- बाल साहित्य के अध्ययन के लिए आर्नी निक्सन सेंटर में कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी, फ्रेस्नो।
- बच्चों के पुस्तक लेखकों और चित्रकारों का समाज।
- ब्रिटिश लाइब्रेरी में बाल साहित्य।
- बच्चों की किताबें , अनुसंधान मार्गदर्शिकाएँ, यूएसः न्यूबेरी लाइब्रेरी।
- प्रारंभिक साक्षरता शिक्षा केंद्र (सेल)।
- ग्रह चित्र पुस्तक (दुनिया भर से चित्र पुस्तकें)।
- अमेरिकी बाल साहित्य का बेट्सी बेनेके शर्ली संग्रह । सामान्य संग्रह, बेइनेके दुर्लभ पुस्तक और पांडुलिपि पुस्तकालय, येल विश्वविद्यालय।
- पुरस्कार विजेता बाल साहित्य का डेटाबेस।
- डिजिटल पुस्तकालय।
- इंटरनेट पर देखी जा सकने वाली 48 भाषाओं में 2,827 बच्चों की पुस्तकों का अंतर्राष्ट्रीय बाल डिजिटल पुस्तकालय भंडार।
- कांग्रेस के पुस्तकालय में डिजीटल बाल साहित्य।